International Journal of Education and Science Research Review
ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org December- 2017, Volume-4, Issue-6 Email- editor@ijesrr.org

काव्य परम्परा में धूमिल का प्रभाव का संक्षिप्त अध्ययन

SUNITA
MA, Department of Hindi
Kurukshetra University
Kurukshetra

सार–
मुक्त छन्द काव्य धारा आज हिन्दी साहित्य की सर्वमान्य काव्यधारा है। सर्वमान्यता की इस स्थिति को प्राप्त करने के लिये मुक्त छन्द कविता ने जितने अन्तर्विरोधों का सामना किया है निश्चित ही हिन्दी की किसी काव्य धारा ने नहीं किया। उद्‌भव और विकास से लेकर कथ्य और शिल्प तक के छोटे बिदुओं पर मुक्त छन्द कविता ने भीषण विरोध और घातक प्रहार झेले हैं। अस्तित्व पर चोट करते जानलेवा आघातों को सहा है, अपमानजनक आरोपों–प्रत्योरोंपों के घेरे में घिरी है। कुत्सित मानसिकता के हाथों बार–बार विद्रूपित हुई है लेकिन पिफर संभली है, सजी है, निखरी है और उत्कट जिजीविषा तथा अदम्य जीवन्तता के साथ आज भी समाज और साहित्यवेत्ताओं की चहेती बनी हुई है। अपने लिय राह बनाने से लेकर 'चाह' पाने तक की विकास–प्रक्रिया में मुक्त छन्द कविता ने दर्जनों नाम पाये हैं–प्रगतिवादी कविता, प्रयोगवादी कविता, नयी कविता, साठोत्तरी कविता, अकविता, कुकविता, सहज कविता आदि। ये सभी नाम वे पड़ाव है जहां वाद–प्रतिवादों के भूसे में से साहित्यिक मूल्यों को एक–एक दाने की तरह चुनकर ऐसी कविता की सर्जना की गयी है जो सामान्य पाठक से लेकर काव्य मनीषियों तक की साहित्यिक भूख को तृप्त कर सके।

प्रस्तावना–
मुक्त छन्द कविता को सजाने सवारने और सर्जना के चरम उत्कर्ष तक पहुंचाने में जिन सध हुए हाथों और मजबूत कन्धों, ने भूमिका निभाई है उनमें एक सम्मानित नाम है–**सुदामा पाण्डे धूमिल।**

धूमिल ने कविता की वर्तमान स्थिति पर विचार करते हुए अर्थहीनता और पेशवर भाषा के तस्कर संकेतों की असार्थकता तथा चालाकी पर बेबाक टिप्पणी की है और युग की सच्चाई को सामने रखते हुए सापफ शब्दों में कहा है कि *पहले एकान्त निर्जन में किसी आदमी के चीखने पर समाज में व्यापक प्रतिक्रिया होती थी* मगर आज की स्थिति यह है कि *कविता घेराव में किसी बौखलाए हुए आदमी का संक्षिप्त एकालाप है।''*

जहां चारों ओर गन्दगी हो, स्वार्थों का तालमेल और जोड़तोड़ हो वहां कविता क्या करे। जहां मतलब की इबारत से होकर सब के सब व्यवस्था के पक्ष में चले गये हैं वहां विपक्ष में कविता नितान्त अकेली पड़ गयी है।

कविता अगर असली अपराधी का नाम लेती है तो सिर्फ उतनी देर तक सुरक्षित है जितनी देर तक उठी हुई गड़ास और कसाई की लकड़ी पर रखी बोटी सुरक्षित है''

इन तमाम विषमताओं के बावजूद धूमिल ने *एक सही कविता को एक सार्थक वक्तव्य''* माना है। उनका विश्वास है कि *कविता भाषा में आदमी होने की तमीज है''* वह जिन्दगी की सार्थकता की तलाश है, संस्कृति और मानवोयता की ठोस जमीन है–*कविता शब्दों की अदालत में, मुजरिम के कटघरे में खड़े बेकसूर आदमी का हलपफनामा है।''*

धूमिल की कविता में युग के बोध के बड़े गहरे और यथार्थ चित्रा मिलते हैं। उसमें आजादी के बाद के भारत का सशक्त बिम्बाकंन हुआ है। नयी कविता के संवदना के वृत में स्वातन्त्रयोत्तर भारत की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थितियों का व्यापक चित्राण हुआ है, समाज के परिप्रेक्ष्य में धूमिल ने मानव मन की सूक्ष्म प्रतिक्रिया को बड़े सहज और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है, साथ ही समाजवाद और जनतंत्रा जैसे शब्दों की आड़ में जनता की संवेदनाओं को भुनाने वाले खूंखार शोषकों की मानसिकता को बिना लाग लपेट के सामने रखा है–

अपने यहां जनतंत्रा एक ऐसा तमाशा है।
जिसकी जान मदारी की भाषा है।''

ग ग ग

समाजवाद
मालगोदाम पर लटकी हुई
उन बाल्टीयों की तरह है
जिन पर लिखा है
आग! आग!
और भीतर भरा है
बालू और रेत।

धूमिल की कविता की प्रमुख प्रवृति मध्यवर्गीय मनुष्य की भावानुभूतियों से जुड़ी हुई है। आज की दुनियां में मध्यवर्गीय मनुष्य कें संशय, अनिश्चय असन्तोष, कुण्ठा घुटन एवं पीड़ा बोध की खुली व्यंजना धूमिल की कविता में व्यक्त होती है। धूमिल ने निराशा के घेरे में कैद विवश और चिन्ता विजडित मनुष्य की इन्हीं स्थितियों को बड़े साहस और अपनेपन के साथ सामने रखा है।

धूमिल की कविता में सामाजिक पक्ष बड़ा प्रबल है। आज के औद्योगिक प्रधानता वाले युग में निरन्तर हो रहे सामाजिक और नैतिक मूल्यों के ह्रास को नयी कविता में खुलकर अभिव्यक्ति मिली है। समाजोन्मुखिता धूमिल की कविता में **तीन रूपों** में व्यक्त हुई है। ;1द्ध *समाज की खोखली स्थिति के चित्राण में* ;2द्धसामाजिक *दायित्व के रूप में और* ;3द्ध *समाज कल्याण के प्रेरक तत्वों के रूप में।* समाज में पूँजीवादी मानसिकता के कारण पनप रहे भ्रष्टाचार के स्वानुभूत चित्रा धूमिल ने खूब प्रस्तुत किये है।

धूमिल की कविता राजनीति से जुड़कर सामने आयी है। धूमिल ने *प्रजातंत्रा के विरूद्ध खुदकुशी की लटकती रस्सी देखी है, रोटी से खेलते हुए तीसरे आदमी को ताड़ा है, और विवश आदमी के रौदे जाने का इतिहास समझा है तथा चालाक सुराजियों द्वारा थोथे वादे कर–करके किसान और मजदूर के साथ छल द्वारा किये जा रहे शोषण को बिल्कुल निकट से देखा है। उन्होंने मादा भेड़िया की तरह अपन छोने को दूध पिलाने और मैमने का सर चबाने वाली दोहरी कथित राजनीतिक प्रक्रिया को आद्यान्त भोगा है, सहा है:*

एक प्यार भरी गुर्राहट
जैसे कोई मादा भेड़िया अपने छोने को
दूध पिला रही हो और साथ ही,
किसी मेमने का सिर चबा रही हो।

युगीन समाज के सामाजिक राजनैतिक, सांस्कतिक, यर्थात् को भोक्ता होकर वहन करने की प्रक्रिया ने धूमिल की कविता में अनेक नई अभिरूचियों को विकसित किया है। वैज्ञानिक दृष्टि से सम्पन्न विवेकशील मनुष्य की प्रतिष्ठा, सामाजिक संदर्भों को उनके परिप्रेक्ष में ग्रहण करने की दृष्टि, रोमानी सौन्दर्य बोध से अलग हटकर तथा समसामायिक विद्रूपता और व्यंग को अपनी परिधि में समेट कर विकसित हुये नये सौंदर्य बोध की स्थापना, समसामायिक सत्य को ग्रहण करने के लिए क्षण की पकड़, रस के परिवर्तित स्वरूप का स्वीकार और शिल्प के धरातल पर तर्क आश्रित नवीनता आदि को धूमिल की कविता म विकसित नयी अभिरूचियों के रूप में गिनाया जा सकता है।

धूमिल सामाजिक सत्य को वाणी देने के लिए भाषा की रात से जूझते हैं, किन्तु उनकी लड़ाई मात्रा सत्ता के परिवर्तन की लड़ाई नहीं है, उस मानसिकता को पहचानने की लड़ाई है, जो हार के पीछे काम कर रही है–आजादी के बाद चालाक सुराजियों ने भाषा के छल द्वारा किसान मजदूर को ठगा है, *पसीने का स्वाद चख लेने वाले शोषकों ने भूख की जगह भाषा को रख दिया है* क्योंकि उन्हें मालूम है कि– ***भूख से भागा हुआ आदमी भाषा की ओर आयेगा और एक भुक्खड़ जब गुस्सा करेगा तो अपनी ही उंगलियां चबायेगा।***

उन्होंने स्वतंत्रा भारत में पनपने वाली सत्ता के संदिग्ध आचरण को पूरी तरह नंगा करके रख दिया है–*चरित्राहीनता मंत्रियों की कुर्सी में तब्दील हो चुकी है। जिन्दा रहने के लिए पालतू होना जरूरी है।* भूख और बेशर्मी हमें पालतू बना देती है। विवेक काम नहीं देता है क्योंकि व्यवस्था से न्याय मिलना मुश्किल है। ***आजकल शहर कोतवाल की नीयत और हथकड़ी का नम्बर एक है।*** सच्चाई को जानना और कहना व्यवस्था के खतरों से खाली नहीं है। पिफर भी धूमिल ने बड़े साहस के साथ सपाट जवान में इन मक्कारियों का कच्चा–चिट्ठा खोलकर रख दिया है–

व्यवस्था की खोह में
हर तरफ
बूढ़े और रक्त लोलुप मशालची
घूम रहे हैं।

कवि ने जनतन्त्रा, त्याग, स्वतंत्राता संस्कृति शांति और मनुष्यता के नाम सत्ता के बायदों की तासीर उजागर की है– रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, चिकित्सा, समाज, अवसर, विश्वशांति और पंचशील के सूत्रा देने वाली सत्ता के पास चुनाव जीतने के अलावा समस्याओं का कोई हल नहीं है।

न सिपर्फ राजनेताओं बल्कि समाज के तथाकथित बुद्धिजीवियों के बारे में भी धूमिल की दृष्टि बिल्कुल सापफ है। उनकी भंगिमा ही उनके विचारों की कसाटी है, जो ये वेलाग निर्णय देती है कि वकील, वैज्ञानिक, दार्शनिक, नेता, कलाकार सब तिजोरियों के दुभाषिये हैं। समाजवाद का आधनिक मुहावरा इन्हें बचाता है। अतः यह कानून की भाषा बोलता हुआ अपराधियों का एक संयुक्त परिवार है। जो साहित्यिक और किताबी विश्लषणों से नहीं सुधारा जा सकता है। इसके लिए एक मजबूत चरित्र की जरूरत है। एक अदद आदमी होने की आवश्यकता है। विकृतियों पर तीखा हमला और तेज धावा धूमिल की कविता का मुख्य बिन्दु हैं जिनको कथ्य के अनुरूप भाषा की भंगिमा ने पूरी मुस्तैदी के साथ उकेरा है–

''सबसे अधिाक हत्याऐं
समन्वयवादियों ने कीं
दार्शनिकों ने सबसे अधिाक जेबर खरीदा
भीड़ ने कल बहुत पीटा
उस आदमी को जिसका मुख ईसा से मिलता था।''

धूमिल का एक दूसरा पहलू भी है वहां जहां वे देश की जवानी को साहस के तेवर से परिचित कराते हैं और युवाआक्रोश को सही जनून से उभारते हैं–

बीस सेवों की मिठास से भरा हुआ यौवन
जब पफटता है तो न सिपर्फ टैंक टूटते हैं
बल्कि खून के छींटे जहां–जहां पड़ते हैं
बंजर–धरती पर आजादी के कल्ले पफूटते है।''

सिपर्फ एक पक्ष ओर जो यह दिखाने के लिए पर्याप्त है कि धूमिल का काव्य कौशल गांव की मौजूदा हालत को, भूख, उत्पीड़न, दीनता आदि की तस्वीर को कैसे एक भोक्ता किसान के मुंह से अभिव्यक्त कराता है–

''उसके आगे थाली आती है
कुल रोटी तीन। खाने से पहले मुंहदुब्बर
पेट भर पानी पीता है और लजाता है
कुल रोटी तीन, पहले उसे थालो खाती है
पिफर वह रोटी खाता है।''

अपनी कविताओं के लिए दूसरे प्रजातन्त्रा की तलाश करने वाला कवि वर्तमान विसंगतियों और कुरूपताओं से कितना क्षुब्ध होगा इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

शिल्प की दृष्टि से धूमिल की कविता बड़ी परिपक्व है। धूमिल ने शिल्प के सभी अंग–उपांगों जैसे छन्द, बिम्ब, उपमान, प्रतीक एवं भाषा आदि सभी क्षेत्राों में विस्तार एवं गंभीरता से विचार किया है।
उपरोक्त तथ्यों को देखते हुए धूमिल को यदि आधनिक कविता का युगपूरूष कहा जाये तो अतियोक्ति नहीं होगी।

सार–

यह एक आश्चर्य जनक किन्तु सत्य है कि मुक्त छन्द काव्यधारा के सशक्त हस्ताक्षर कवि सुदामा पाण्डे धूमिल की रचनाधर्मिता के मूल्यांकन के लिए अभी तक स्वतंत्रा रूप से कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। अन्य कवियों के साथ धूमिल की साहित्यिक चेतना को आंकने के कुछ प्रयास अवश्य हुए हैं। यथा–श्री चंद्र स्वरूप ने वर्ष 1991 में धूमिल और मदन डांगा के काव्य में सामाजिक चेतना विषय पर शोध कार्य किया है। धूमिल की ओर पर्याप्त ध्यान न देने का कोई विशेष

कारण हमारी समझ में नहीं आता। हां धूमिल की रचनायें परिमाण में कम है, किंतु साहित्यिक प्रवृतियों के मूल्यांकन में परिमाण नहीं गुणवत्ता को प्रधानता दी जानी चाहिये।

ग्रंथ–सूची

1–अज्ञेय ही0स0वात्स्यायन : तारसप्तक,
भारतीय ज्ञानपीठ काशी तृ.सं.1970

2–इन्द्रनाथ मदान : आधनिक हिन्दी कविता का मूल्यांकन,
हिन्दी भवन, इलाहाबाद 1962

3–केदार नाथ सिंह : कवि वक्तव्य तीसरा सप्तक,
सं.अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ काशी, तृ.सं. 1967

4–डॉ.केसरी नारायण शुक्ल : आधनिक काव्यधारा,
नन्दकिशोर एण्ड सन्स वाराणसी 1967

5–गजानन माधाव मुक्तिबोधा : एक साहित्यिक की डायरी,
भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन काशी 1969

6–जगदीश गुप्त : नयी कविता स्वरूप और समस्याएं,
भारतीय ज्ञानपीठ काशी,प्र.सं.1969

7–डॉ0 धार्मवीर भारती : मानवमूल्य और साहित्य,
दिल्ली 1960

8–डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा : हिन्दी साहित्य कोष,
ज्ञानमण्डल वाराणसी द्वि.सं. 2020वि.

9–डॉ.नगेन्द्र : आस्था के चरण,
नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली 1968

10–डॉ0 नगेन्द्र : काव्य बिम्ब,
नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली 1967

11–डॉ0 नगेन्द्र : रस सिद्धान्त,
नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली 1964